पसायदान

श्लोक १

आतां विश्वात्मकें देवें। येणें वाग्यज्ञें तोषावें।
तोषोनि मज द्यावें। पसायदान हें॥

विश्वात्मा इस वाग्यज्ञ [शब्द रूपी यज्ञ] से सन्तुष्ट होकर
मुझे अपनी कृपा प्रदान करें।

श्लोक २

जें खळांची व्यंकटी सांडो। तया सत्कर्मीं रती वाढो।
भूतां परस्परें पडो। मैत्र जीवांचें॥

पापीजन अब पापकर्म न करें, सत्कर्म करने में उनकी रति [इच्छा] बढ़े,
और समस्त प्राणी परस्पर मैत्रीभाव से, सामंजस्य से रहें।

श्लोक ३

दुरितांचें तिमिर जावो। विश्व स्वधर्मसूर्यें पाहो।
जो जें वांछील तो तें लाहो। प्राणिजात॥

पापों का अन्धकार नष्ट हो, इस विश्व को धर्म के सूर्योदय के दर्शन हों,
और समस्त प्राणियों की जो-जो कामनाएँ हों, वे सब पूर्ण हों।

श्लोक ४

वर्षत सकळमंगळीं । ईश्वरनिष्ठांची मांदियाळी ।
अनवरत भूमंडळी । भेटतु भूतां ॥

सभी जन ईश्वरनिष्ठ सन्तों की संगति में रहें,
जो सभी पर अपने आशीर्वादों की वर्षा करेंगे।

श्लोक ५

चलां कल्पतरूंचे आरव । चेतनाचिंतामणीचें गांव ।
बोलते जे अर्णव । पीयूषाचे ॥

सन्तजन कल्पवृक्षों से भरे, चलते-फिरते उपवन हैं और
ये चिन्तामणि के चैतन्य ग्राम हैं। उनके वचन अमृत के सागर के समान हैं।

श्लोक ६

चंद्रमे जे अलांछन । मार्तंड जे तापहीन ।
ते सर्वांही सदा सज्जन । सोयरे होतु ॥

ये सन्तजन कलंकहीन चन्द्रमा हैं, तापहीन सूर्य हैं।
ये सन्तजन सदैव सभी लोगों के स्वजन बने रहें।

श्लोक ७

किंबहुना सर्व सुखीं । पूर्ण होऊनि तिहीं लोकीं ।
भजिजो आदिपुरुषीं । अखंडित ॥

सभी लोकों के सभी प्राणी, सर्वसुख से परिपूर्ण हों और
वे आदिपुरुष को, ईश्वर को अखण्डरूप से भजते रहें।

श्लोक ८

आणि ग्रंथोपजीविये । विशेषीं लोकीं इयें ।
दृष्टादृष्टविजयें । होआवें जीं ॥

यह ज्ञानेश्वरी ग्रन्थ जिन लोगों के लिए उनके प्राणों के समान ही है,
उन्हें इस लोक में तथा परलोक में विजय प्राप्त हो।

श्लोक ९

येथ म्हणे श्रीविश्वेशरावो । हा होईल दानपसावो ।
येणें वरें ज्ञानदेवो । सुखिया झाला ॥

तब श्रीविश्वेश्वर, सद्गुरु निवृत्तिनाथ ने कहा—"यह प्रसाद तुम्हें दिया जाता है।"
इससे ज्ञानदेव को अत्यन्त सुखानुभूति हुई।

© एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

भारत में, महाराष्ट्र राज्य के आलन्दी ग्राम में स्थित, ज्ञानेश्वर महाराज की समाधि का यह चित्र,
अशेषा कॉनरॉय द्वारा चित्रित है।

'पसायदान' यानी 'दिव्य कृपा का प्रसाद,' वह शीर्षक है जो १३वीं शताब्दी के सन्त-कवि ज्ञानेश्वर महाराज द्वारा लिखित 'श्रीभगवद्गीता' की टीका के अन्तिम नौ श्लोकों को दिया गया है।

'पसायदान', हृदय से निकली एक प्रार्थना है जिसमें ज्ञानेश्वर महाराज समस्त मानवजाति के उत्थान व हित के लिए अपने श्रीगुरु के आशीर्वादों का आवाहन करते हैं। वे प्रार्थना करते हैं कि धर्म का सूर्य तेजस्विता के साथ जगमगाए और संसार में शान्ति व सौहार्द लाए, तथा सभी सुखी हों और सन्तजनों की सत्संगति में रहें।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।